

Nav Varsh Puja

Date : 25th October 1995
Place : Delhi
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 13
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

आज नया साल का शुभ दिवस है। आप सब को शुभ आशीर्वाद!

हर साल नया साल आता है और आते ही रहता है। लेकिन नया साल बनाने की जो भावना थी, उसको लोग समझ नहीं पाते। सिवाय इसके की नये साल के दिन नये कपड़े पहनेंगे, खुशी मनायेंगे। कोई ऐसी बात नहीं सोचते, कि नया साल आ रहा है, इसमें हमें नयी कौन सी बात करनी है। जैसे चल रहा है, वैसे चल रहा है। और उसी के सहारे हर साल नया साल सब को मुबारक हो।

सहजयोग में हम लोग जब इतने सामूहिक हैं, ये सोचना चाहिये कि अब कौन सी नयी बात सहजयोग में घटेगी। ध्यान में आप लोग काफ़ी गहरे उतर गये। ध्यान आप समझते हैं और एक स्थिति भी आपने प्रस्थापित कर ली। पर नये साल में कौन सी नयी बात करनी चाहिये। इस ओर हमारा ध्यान जाना जरूरी है। असल में पहले तो हमें ये भी सोच लेना चाहिये, कि हमारे देश के क्या प्रश्न हैं और सारी दुनिया के कौन से प्रश्न हैं? और उन प्रश्नों को हम किस तरह से नतीजे पे ला सकते हैं। इसलिये मैं सोचती हूँ कि जिन सहजयोगियों का जहाँ इंटेरेस्ट हो, उसे वो ध्यानपूर्वक देखें। ऐसी तो बहुत सी चीज़ें सहजयोग में नयी नयी शुरू हो गयी। आप जानते हैं कि इस बार हमने सोचा है, कि शिया मुसलमानों को बुलवा के समझायें। इसके लिये कोशिश करें और शिवाजी महाराज का जो बड़ा पवित्र जीवन रहा, उसका भी प्रचार करने की कोशिश करें। तो दोनों चीज़ें बहुत अच्छी है, की शिया लोग समझ जायें कि धर्म क्या है और शिवाजी के जीवन को देख कर के हम लोग भी समझ जायें कि धर्म क्या है और उनके आदर्श क्या थे? और उस आदर्श के लिये उन्होंने क्या किया? इतने थोड़े से समय में उन्होंने इतना कार्य कर के दिखाया। अब संघटित रूप में हम लोग बहुत ठीक हो गये। खास कर दिल्ली में और दिल्ली के आसपास और सहजयोग बढ़ भी रहा है। उसके साथ साथ ये भी सोचना है, हमारे अन्दर गुरुपन आ रहा है या नहीं। सहजयोग बढ़ रहा है। उसकी क्वांटिटी बढ़ रही है, तो क्वालिटी आयी की नहीं ये बहुत जरूरी है, ये सोचना है और उसकी तरफ़ ध्यान देना चाहिये।

इसकी ओर मैं ये कहूँगी कि ध्यान, धारणा आदि के जो कुछ भी आपके ग्रुप्स चल रहे हैं उन्हें थोड़ा आप लोग मद्देनज़र करें। जा के देखे क्या चल रहा है। और अपनी तादाद बढ़ाने के लिये आसपास के जो गाँव हैं, इस पर जो आपने कार्य किया है, इसी प्रकार आप लोग आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन इतने साल में आपको ये खयाल करना चाहिये, कि हम लोगों ने जैसे कि बहुत से प्रोजेक्ट निकाले हैं, जिससे हमें आ गये। घर आ गये। और आश्रम भी बन रहा है। ये भी अच्छी बात है। लेकिन उस आश्रम में हम लोग क्या करने वाले हैं? क्या क्या चीज़ें, उसको हम बढ़ा सकते हैं। उसमें कौन सी कौनसी चीज़ें हम छाप सकते हैं, जिससे की हमारे बारे में लोग जाने। एक चीज़ मैं सोचती हूँ कि, बहुत साल पहले इसको मैंने सोचा था, कि सहजयोग का एक न्यूज पेपर जरूर चलना चाहिये। बम्बई में सहजयोग का न्यूज पेपर चल पड़ा। उन्होंने कुछ ऐसी गलतियाँ कर दी की वो बंद करना पड़ा।

लेकिन अब इतने तादाद में लोग हैं। तो हम, जैसे आपका न्यूज लेटर आता है वहाँ से, उसको ट्रांसलेट करते हैं, तो उसमें ज्यादातर बाहर के बारे में आता है। इसी तरह हिन्दुस्तान के बारे में भी आप लोगों को खबर दें और कार्य करें। अब मैं सोचती हूँ तीन पैमानों पर खास ध्यान दें, जिसका कि जागतिक प्रश्न आज है। उन तीनों चीज़ों पे आप अगर ध्यान दें, तो पहली चीज़ मेरी समझ में आती है, वो है शांति। हम अपने अन्दर शांति प्रस्थापित करें और बाहर जो अशांति है उसका कारण ढूँढ के देखें। वो क्यों अशांति है? किस वजह से सारे देश में गड़बड़ या दूसरे देशों में गड़बड़ है? इसकी जड़ का पहले पता लगाना चाहिये। और उसमें हम किस तरह से कार्यान्वित हो सकते हैं। अब जैसे की चेचेनिया का प्रश्न। तो हमने रशियन से बात करी। तो उनकी बात, वो कहते हैं कि हमारी तो कोई छापता ही नहीं। सब वन साइडेड मामला चल रहा है। उन्होंने जो बताया कि चेचेनिया में जो गड़बड़ है वो ये है, कि हम साम्राज्यवादी है। और हम डेमोक्रेटिक कंट्री है। इसमें बड़ा फर्क है। डेमोक्रेटिक कंट्री में आप लोकशाही में नहीं। जो लोकशाही में, इसमें आप किसी भी एक धर्म के ऊपर राज्य नहीं कर सकते और वो धर्म, कि जो अपना अकेलापन लिये है। जैसे ये तीनों धर्म जो हैं, बुद्ध का भी वही हाल है। बुद्ध भी वही और महावीर भी वही। और ये और ये जो तीन धर्म हैं, जो कि पाँच से आये, जिनको हम कह सकते हैं कि यहूदी, ज्यू, ख्रिश्चन और मुसलमान। जो एक एक किताब को सिर्फ मानते हैं और एक ही इनकार्नेशन को मानते हैं और इसलिये वो एक्सक्लूसिव हैं। लेकिन वास्तविक में एक्सक्लूसिव नहीं। अब ये पॉइंट उनको लिखना चाहिये।

वो क्या है? कि इन सब धर्मों में समझ लीजिये, आप अगर मोझेस की बात लिखे। तो उन्होंने अब्राहम के बारे में कहा। फिर ईसामसीह आये। उन्होंने मोझेस, अब्राहम सब के बारे में कहा। फिर जब मोहम्मद साहब आये, इन्होंने तो सब तीनों के बारे में, यहाँ तक ईसामसीह के माँ के बारे में भी कहा। तो ये धर्म जो है, एक्सक्लूसिव है। ये बनाये गये हैं। इसलिये झगड़ा होता है। और कोई कहे कि कोई विश्व धर्म बनायें तो इस बात को बिल्कुल नहीं पसन्द करते। तो लड़ेंगे क्या? लड़ने की अभी जो उनकी इच्छा है, प्रवृत्ति है उसे वो कैसे समाधान दे सकते हैं? इसलिये वो इस चीज़ को मानने को तैय्यार नहीं कि धर्म है, उनका जो है एक्सक्लूसिव। और ये सारे एक्सक्लूसिव धर्म के ऊपर हम अगर चाहें, डेमोक्रेसी में एक एक उनकी आ जायें। उधर वो आ जायें, उधर वो आ जायें, तो झगड़ा चलते ही रहता है। इसलिये उनको विश्व धर्म में आना चाहिये। विश्व धर्म में आते ही ये भावनायें टूट जायेंगी कि हम अलग हैं, वो अलग हैं।

देखिये आप अगर देखे तो आज भी, इस वक्त भी हर जगह धर्म को ले कर के बड़े बड़े संग्राम हो रहे हैं। वो सब खत्म हो जायें। अगर ये हो जायें कि ये धर्म एक्सक्लूसिव है ही नहीं। आप लड़ क्यों रहे हैं? ये अगर यहूदी है तो वो मानता है, फिर ईसामसीह वाले लोग वो मानते हैं, कि सब लोग उसी एक एक प्रणाली से ही निकले है। जब ये बात है, जब कौनसा भी धर्म एक्सक्लूसिव नहीं, तो ये झगड़ा ले कर के और सारे दुनिया में आज जो क्रंदन चल रहा है वो, उसको बंद कर दे। उन्होंने यही कहा, समझ लीजिये कि अभी चेचेनिया में मुसलमानों को हमने। तो ये मुसलमान कौम प्रसिद्ध है कि एक एक आदमी २८ बच्चे तक पैदा करता है। और इन्होंने ऐसे बच्चे पैदा कर के, वो तो कहते हैं कि फैक्टरी है वहाँ की और क्या! और अपने को मेजॉरिटी बना ली है। अब अगर उनको ये राज दे देंगे तो फिर यही करेंगे, फिर आप उनको कैसे रोकेँगे? तो इनके धर्म में जो है, जो कुछ भी शक्ति है वो ये है,

कि हम बहुत तादाद में है। तो ये बढ़ाना कोई मुश्किल नहीं है। और अगर इस तरह से ये बढ़ गये, तो ये तो सारे रशिया को खा जायेंगे। तो ये रशियन क्यों नहीं? किसी एक धर्म को ले कर क्यों चल रहे हैं? मुसलमानों का तो ये है।

अब जैसे हिन्दुस्तानी। वो पहले मुसलमान हैं फिर हिन्दुस्तानी हैं। ये सारे देशों में, अब यहाँ के मुसलमानों ने ऐसी चपत खायी पाकिस्तान में, कि हर रोज १८ से ले कर २० लोग मारे जा रहे हैं जो हिन्दुस्तानी हैं। अब उनका इंटरव्यू आया था। शायद आप लोगों ने देखा होगा।न यहाँ के रहे न वहाँ के। ऐसी बुरी हालत है। अब यहाँ की हिन्दुस्तानी लोगों की खोपड़ी में आ गयी बात, कि हिन्दुस्तान में जो ग्रूप है वो बहुत समृद्ध है। वो सब ठीक है। सबको ये है कि कौन आदमी कल कट के खत्म हो जायेगा पता नहीं। ये दृश्य है। और मारे जा रहे हैं पाकिस्तान। क्योंकि वहाँ सिंधी और पंजाबी जो हैं वो नहीं चाहते ये लोग मरे। हिन्दुस्तानी होने की वजह से उन्होंने अपना एक ग्रूप बना लिया। सब कराची के आसपास रहते हैं। अब कहते हैं हमें कराची दे दो। क्योंकि हम मैजॉरिटी है। अब कराची उनको एक हीहै।

तो सारे जो ये धर्म है, खास कर इस्लाम। इस्लाम में सब से बड़ी बात उन्होंने जो कही है, कि जब तक तुम खुद को नहीं जानोगे तुम खुदा को नहीं जानते। पहले खुद को जानो। अब दूसरी बात, इस पर इन्होंने आफ़त मचायी हुई है, वो ये है कि ये निराकार को मानते हैं। साकार को मानते ही नहीं। जो निराकार को मानते हैं वो जमीन के लिये क्यों लड़ रहे हैं? वो तो साकार जड़ जीव है। और आप निराकार को मानते हैं तो निराकार को प्राप्त करो। और निराकार को प्राप्त किये बगैर आप जमीनों के लिये लड़ रहे हैं। ये भी दूसरी गलत बात है। पर इन लोगों को समझाना आसान बात नहीं है। इन पे तो खून सवार है। जो भी बात है लेकिन कहीं कहीं ऐसे हम लोग आर्टिकल्स देना शुरू कर दें, ऐसी बातें कहना शुरू कर दें, तो लोग सोचने लगेंगे। देखिये, ये जो बात कह रही थी, इसमें सच्चाई कितनी है और झूठ कितना है। और फिर ये भी देखेंगे की हम आज तक लड़ते रहे, मरते रहे, उससे हमें क्या फायदा हुआ?

उसके बाद, मतलब एक मुसलमान जाति ऐसी थी की जो सहजयोग के लिये बड़ी मुश्किल है। हालांकि ऐसा नहीं कहना चाहिये क्योंकि मुसलमान काफ़ी जगह आये हैं, अपने सहजयोग में है १५-२० सहजयोगी सारे वर्ल्ड में। लेकिन इस बारे में मेरा ये भाषण वहाँ हुआ रेडिओ पर। तो मैंने उनसे साफ़ साफ़ कह दिया और मैंने जब सारी साफ़ बातें करीं, तो किसी ने कुछ इस विषय में बोला नहीं। क्योंकि वो लोग सब टेलिफोन से बात कर रहे थे। पर वहाँ की कुछ लेडिज ने फोन किया कि हमें तो ठण्डा ठण्डा आ रहा है, माताजी की बात सुन के। और बहुत से लोग पार हो गये। ये भी एक सोचने का तरीका, जरिया है, जिससे जो लोग बाहर गये हुये हैं, जैसे इरान, यूएसए.। अब वो लोग सब वहाँ बैठे हुये हैं अमरिका में। उनको हम पकड़ सकते हैं। इस प्रकार हर जगह मुसलमान जहाँ जहाँ गये। एक तो उत्पाती बहुत हैं। झगड़े करते हैं। और दूसरे ये की ऐसी ऐसी बातें सोचते हैं, कि जैसे कि अफ़्रिका में उन्होंने अब सब अपना गुट बना लिया है और अभी एक आदमी जिससे कि एक बड़ा भारी गँग बनाया था, और वो चाह रहे थे कि वहाँ का जो वर्ल्ड ट्रेड है उसको उडा दे। उसमें वो पकड़ा गया। उसको अठारह साल की सजा हुई। तो ये लोग जहाँ भी रहते हैं उत्पाती है। समझते नहीं। समझाने की जरूरत है कि जब आप निराकार में विश्वास

करते हैं, तो आप जमीन के पीछे क्यों लड़ते हैं? और दूसरी बेवकूफी की बात उनकी ऐसी हुई, जब आप मर जायेंगे, और जब आप गाड़े जायेंगे, तो जब कियामा आयेगा, जब रिइरेक्शन का टाइम आयेगा, तो उस वक्त में आपके शरीर निकल आयेंगे और उनको रिइरेक्शन मिलेगा। तो अब बताई ५०० साल बाद कौन से शरीर का हिस्सा निकलेगा?

इस प्रकार अब सोचिये की काफ़ी अजीब चीज़ है। पर इसको किसी तरह से लिख कर के, हम लोगों को चाहिये कि कुछ न्यूज पेपर में ये लिखा जाये और उनको बताया जाये कि बेवकूफी की बातें न करो। और इस बेवकूफी में फँस गये। और सब से बड़ी बात तो ये है कि मोहम्मद साहब ने कुरान नहीं लिखी। चालीस साल बाद मोहम्मद साहब के, कुरान लिखी गयी। ईसामसीह ने कभी कोई बाइबल नहीं लिखी और न ही मोझेस ने कुछ लिखा। इस प्रकार ये भी बात है, इसको कहा। इसके लिये आप लोग लड़ रहे हैं। अब ये अगर इस तरह से चलते रहे, तो नर्क में जायेंगे। और तो कोई इलाज मुझे दिखायी नहीं देता है। बेवकूफी भी कोई हद होती है। ऐसी बेवकूफी की बातें कर के, और इनका कोई कल्याण नहीं हो सकता। अब इनमें से मुसलमानों को कोई अगर ढूँढो तो बहुत मुश्किल है। हो सकता है एकाध जन निकल आये और आदमी इतनी हिम्मत कर ले कि ये बात कहे और समझाये। पर ये लोग सब डरते हैं कि ये मारे जायेंगे और उनको खत्म कर देंगे। पर ऐसा होगा नहीं कि अगर सहज में आये तो किसी को मार नहीं सकता। उतनी हिम्मत कोई अगर करे तो इन लोगों को समझा सकते हैं और ये जो सब से बड़ी चीज़ है, कि हमारी शांति खत्म हुई है ये धर्म की वजह से। ये जो अधर्मी धर्म है उसके कारण ये दशा है। पर एक चीज़ यहीं खत्म हो जाये तो युद्ध का, ७५% तो सॉल्व हो सकते हैं।

अब दूसरी बात ये है कि अशांति कहाँ से लाते हैं। क्योंकि अगर उस पैमाने पे देखा जायें तो बड़े बड़े देशों में लड़ाई हो रही है, झगड़े हो रहे हैं,(अस्पष्ट)। जैसेसाहब ने वहाँ पर अटम बॉम्ब लगा दिये। अब उनके यहाँ भी बहुत से बॉम्ब पड़ रहे हैं। लेकिन अगर आप व्यक्तिगत देखे, इंडिविज्यूअली देखे, तो इंडिविज्यूअल में जो अशांति है वो कहाँ जाती है। किस वजह से मनुष्य अशांत होता है। अब उसकी जड़ें अनेक हैं। आप कहेंगे जेलसीज हैं, अम्बिशनस हैं, ये है, वो है। और राइट साइडेड आदमी हो तो अशांत रहेगा। लेफ्ट भी रह सकता है। क्योंकि लेफ्ट दुःखी बन के रहेगा। और राइट जो है वो अपने को सुखी समझ के, पर है तो दोनों में ही अशांति। उसके लिये अपनी अशांति को हमें ठीक करना चाहिये।

अब मेरी किताब में आपने पढ़ा होगा, कि मैंने उसमें जीन्स के बारे में लिखा है। सहज में आने से जीन्स ठीक हो जाते हैं। और जब जीन्स ठीक हो जायेंगे, तो इन्सान अपने आप शांत होगा। याने कोई जरूरत नहीं और उसकी सारी ही तबियत बदलती है। तो उसमें मैंने काफ़ी एक्सप्लेन कर के बताया है फॉस्फरस पे, कि फॉस्फरस जो जीन्स में होते हैं, जब आदमी ड्राय हो जाता है तो फॉस्फरस एक्सप्लोट होता है। वो तो आप जानते हैं। तो परलीकर कह रहे थे कि, 'माँ, ये तो पॉइंट अभी तक किसी ने कहा ही नहीं। एक साहब थे। फॉस्फरस पे तीन बार तीन लोगों को नोबल प्राइज मिला है। पर ये जो बात आपने कही किसी ने आज तक कही नहीं।' मैंने कहा कि ये तो नोबल प्राइज के लिये गये ही हुये हैं। शायद हो ही जायेगा। पर बात क्या है, कि जब आदमी के अन्दर अशांति आ जाती है, अशांति में हो सकता है। मैं सोचती हूँ दो तरह से एक तो अहंकारी लोगों की होती है और दूसरी जो कि लेफ्ट

साइडेड है, पझेस्ट है। अफ्रिका का के जो बड़े बड़े हैं, वो है पझेस्ट लोग लेकिन बाकी जो है इनके अहंकार के। तो अहंकार और पझेशन इनके दोनों को अगर हम लोग नष्ट कर दे, तो हम शांत हो जायेंगे और उस शांति के माध्यम से हम स्वयं ही दूसरों को शांत करेंगे। तो ज्यादा ध्यान इधर करना चाहिये कि भाई, देहात में गये। वहाँ लोगों को रियलाइजेशन दिया था। उनको शांति का मार्ग दिया।

अब जैसे नॉर्थ केगाँव हैं। इसमें एक खराबी जो बहुत पायी जाती है, कि वहाँ पर मुसलमान मेंटलिटी की वजह से औरतों को बहुत दबाया जाता है। और फिर औरतों को जब आप दबाते हैं और जब वो खड़ी होती हैं तो मर्दानों से बढ़ के। तो ये जो रिस्पेक्ट फॉर विमेन होनी चाहिये। और यहाँ की औरतें भी ऐसी कुछ पिछड़ी हुई हैं, कि वो समझ नहीं पाती कि अपना सेल्फ रिस्पेक्ट क्या है। अब सहजयोग में भी हमारे यहाँ औरतें बहुत कमजोर हैं। हालांकि मैं एक औरत हूँ। ध्यान नहीं करना। मतलब बॅक बाइटिंग, झगड़ा लगाना ये धंधे चलते हैं। और सब से बड़ा तो डॉमिनेशन। अब ये चीज़ें जो इन औरतों में आ गयी हैं, उससे अपनी शक्ति हीन हो जाती है। क्योंकि औरतों से शक्ति आती है। पोटेंशियल, और जब वो इस तरह से बिहेव करने लग जाती हैं, तो सारे ही समाज की जो शक्ति है वो खत्म हो जाती है। तो सब से बड़ी बात ये है कि अपने औरतों में शांति प्रस्थापित हो। और इसलिये हजबंड में भी शांति होनी चाहिये। वो अगर शांत हो और वाइफ की रिस्पेक्ट करे, तो मेरे खयाल से बच्चों में भी शांति आ जायेगी। घर में भी शांति आ जायेगी। अब यहाँ पर जो एक तरह का ऑग्रेशन है, पुरुषों का, वो वहाँ तक कभी सीमित रहेगा ही नहीं। वापस लौट कर के आदमियों पे आयेगा। तो जो कंपॅनिअनशिप होती है, जो आपस में प्यार से बात करना, आपस में अच्छे से बात करना सब के सामने इस तरह से बिहेव करना चाहिये। और वैसे भी इस चीज़ पे हमें ध्यान देना चाहिये। जैसे बहुत से लोगों को मैंने देखा है, कि उनकी बीबियाँ कुछ काम की नहीं, सहज के। खोपड़ी पे बैठ जायेंगे। बहुतों के ऐसे हजबंड है जो बीबियों की परवाह नहीं करते। और उनको मारते-पिटते रहते हैं। अब भी सहजयोग में ऐसे केसेस है। इस से बड़ा दुःख होता है मुझे, कि अभी भी अगर मियाँ और बीबी में कम्पॅनिअनशिप नहीं आती है, तो वो कोई सिरिअस बात है। मेरे लिये बड़ी सिरिअस बात है। कम्प्लीट कम्पॅनिअनशिप, क्योंकि आप अभी सहजयोगी हो गये हैं। वाइफ भी आपकी सहजयोगी है। और जब दोनों आदमी एक ही इसमें बैठे हुये हैं, तो उनमें आपस में झगड़ा कैसे? होना ही नहीं चाहिये। क्योंकि ये बड़ी डेंजरस चीज़ है। जब आप सहजयोग में आये हैं और आपस में लड़ रहे हैं, तो सबसे तो बड़े कि आपसे तो डेईटिज सब नाराज हैं। और किस आफ़त में फँसे हो, ये बड़े ध्यान देने की बात है।

समझ लीजिये कि एक औरत है और एक आदमी ऐसा है, कि जबरदस्ती उसे परेशान कर रहा है। बेकार में, ये नहीं अच्छा, वो नहीं अच्छा, ऐसा नहीं, वैसा नहीं। तो एक दिन ऐसा आ जायेगा कि उस आदमी की सारी डेईटिज उससे नाराज हो जायेगी। लक्ष्मी का प्रॉब्लेम! लक्ष्मी का नहीं हुआ तो हार्ट का प्रॉब्लेम। सब से तो बढ़ के लेफ्ट नाभि जब पकड़ जाती है, तो और तरह की बीमारियाँ हो सकती है। अब लेफ्ट नाभि पर बहुत ही ज्यादा मैंने काम किया है। और मैं देखती हूँ कि लेफ्ट नाभि जो है, वो बड़ी मुश्किल से ठीक हो सकती है। क्योंकि इंट्रोस्पेक्शन नहीं। सोचते नहीं कि लेफ्ट नाभि हमारी क्यों पकड़ गयी है। फिर समझ लो, वाइफ। वो जबरदस्त है, सुनने को तैयार नहीं, अपना ही चलाती है, जो भी है। अपमान करती है। उससे बैठ के बात करो। आपस में रेकॉल्ड होना

चाहिये। बातचीत होनी चाहिये। अब लोग सहजयोग में आते हैं। तो देखा जाता है कि, चलो सहजयोग के पीछे। कभी मियाँ-बीबी की बातचीत नहीं, बच्चों से बातचीत नहीं। ये तो ऐसे ही हुआ कि इंग्लंड, अमेरिका में लोग हॉलिडे पे जाते हैं। सहजयोग के लिये टाइम देना चाहिये। पर कम्पनिअनशिप में। दोनों ने ही। बच्चों को भी लाईये, वाइफ़ को भी लाईये। सब को ला कर के। अगर आप चाहें कि आप सहजयोग का कार्य करते हैं और वाइफ़ अपनी घर में बैठी है। जाते ही साथ वो बिगड़ पड़े। तो कोशिश ये करनी चाहिये के पूरी कम्पनिअनशिप हो। वाइफ़ से डिस्कस करें। उसे बतायें कि ये प्लन है। कैसे करें? क्या करें? उनका भी उत्थान होना चाहिये। उनकी भी इंटलेक्च्यूअल लेवल बढ़नी चाहिये। उनकी भी सूझबूझ बढ़नी चाहिये।

तो ये जो मुसलमानों की असर से यहाँ पर मैंने देखा है कि अब उल्टा हो रहा है। पहले तो मैं देखती थी कि औरतें बहुत दबू थी, अब वो औरतें आदमियों को दबोच रही हैं। तो ये जो अक्शन-रिअक्शन है, इसको सहजयोग में एकदम खत्म कर दो। तो इसका इलाज ये है कि पहले अपने जीवनी में, अपने वैवाहिक जीवन में ये ठीक करो। अब जब आप शांत हो जायेंगे, तो आपके बच्चे भी शांत हो जायेंगे। ये सारी जितनी भी बीमारियाँ हैं अशांति की जिसमें आप बड़े बड़े युद्धों में आप देखते हैं, ये आती कहाँ से हैं। ये मनुष्य से आती हैं। कोई आकाश से नहीं आती। कोई आपके पेड़ों से नहीं आती। ये जो जड़ इसकी जो है, मनुष्य और अगर मनुष्य ही इस चीज़ में, शांति में रम जायें और उसमें वो पनप जायें, और उसके लिये वो बड़ी गौरवशाली चीज़ समझें कि, 'मैं बहुत शांत चित्त हूँ।' कम से कम सामाजिक झगड़ा ठीक हो जायें। जो सामाजिक झगड़ा है उसको ठीक करने का भी कार्य सहजयोगियों को करना है। पर जो आपस में लड़ते रहते हैं वो क्या जा कर के सामाजिक झगड़ा ठीक करेंगे। बहुत बार ऐसी शिकायत आती है कि, 'माँ, वो साहब तो बहुत अच्छे हैं लेकिन उनकी बीबी बड़ी जबरदस्त है।' फिर कहीं अगर उनकी बीबी अच्छी तो साहब जबरदस्त। इस प्रकार बहुत बार रिपोर्ट्स आते हैं।

तो हम लोगों के पास तो अपनी एक सभ्यता है। अपना एक तौरतरीका है। उस सभ्यता से वंचित हो कर के और हम गलत काम करते हैं। अपने यहाँ, कम से कम, क्योंकि हम महाराष्ट्र में देखते हैं, बीबी की बहुत इज्जत करते हैं और बीबी भी हजबंड की बहुत इज्जत करती है। एक सभ्यता है। और उसमें ऐसा नहीं चलता है कि हजबंड वाइफ़ को सोचता है कि कोई और चीज़ है या उसका दर्जा उससे कम है। ये बहुत बार मैंने समझाया कि रथ के दो पहिये होते हैं। एक अगर छोटा-बड़ा हो जायें तो ठीक नहीं। दोनों की सिमिलैरिटी एक नहीं होती। ये कहना चाहिये कि उनकी हाइट एक होती है, बनावट एक होती है, सब होती है। पर दोनों, अगर राइट का लेफ्ट में लगाओ और लेफ्ट का राइट में लगाओ तो लगेगा ही नहीं। तो दोनों में जो है अपनी अपनी विशेषता होती है। जैसे एक औरत है। औरत की अपनी कमज़ोरियाँ, उसकी एक अपनी तबियत होती है। आदमियों की अपनी एक तबियत होती है। वो घड़ी से लगाये रहते हैं। मैं तो बहुत कहती हूँ आदमियों को की तुम घड़ी उतार दो। अब औरतों को है थोड़ा टाइम लगता है। कहीं जाना हो, कुछ हो, वो टाइम से नहीं चले तो हो गया आदमी लोगों का। इस प्रकार छोटी छोटी चीज़ है। ये बड़ी छोटी चीज़ है। इस पे ही सारा झगड़ा शुरू हो जाता है। मुझे ये लगता है कि आदमी सोचते हैं कि वो इनचार्ज है कि टाइम पे पहुँचने के लिये। नहीं हुआ टाइम से तो ऐसी आफ़त नहीं आने वाली। धीरे धीरे अपने माइंड को ऐसा ट्रेन करें कि जिससे आप रिअैक्ट है। हर समय माइंड को ऐसी दशा में रखना चाहिये रिअैक्ट न करें।

सिर्फ उसको देखो मत। धीरे धीरे आपको आश्चर्य होगा कि आप भी ठीक हो जायेंगे। बीबी भी ठीक हो जायेगी और दोनों को ही कि दोनों जो ही इसको विटनेस की तरह से हैं। तो ये जान लेना चाहिये कि औरत चीज़ अलग है, आदमी अलग चीज़ है। उनके जरिये अलग है और उनके तरीके अलग हैं। हालांकि दोनों की समझ लीजिये की सिमिलैरिटी यही है कि दोनों इन्सान हैं। अब इस पर थोड़ासा आप लोगों को सोचना चाहिये कि सहजयोग में इस प्रकार के प्रॉब्लेम्स क्यों आयें?

जैसे एक लड़की लखनौ से आयी थीं यहाँ पे शादी हो के। उसके पच्चीसो प्रॉब्लेम खड़े हैं। उससे बातचीत करना चाहिये। उसको पूछना चाहिये कि क्या बात है, क्या नहीं? सहजयोग किसी को तोड़ने के लिये नहीं। सब को जोड़ने के लिये है। तो कोई चीज़ टूटती है उसके पीछे क्या कारण है? कैसा है? इस तरफ़ आप लोगों को देखना चाहिये और उसको जोड़ना चाहिये। जब ये जोड़ना शुरू हो गया, तो ये भी सोचना चाहिये कि ये दिल्ली वाले, तो वो बम्बई वालों से एकदम जुड़ जायें। वैसा नहीं होता। 'दिल्ली में पूजा होनी चाहिये।' 'क्यों साहब?' बम्बई में हो रही है तो भी दिल्ली में ही हो रही है। जब आप अपने दिल को बड़ा कर के देखिये, तो अब तो सारा विश्व है। कहीं भी पूजा हो रही है तो आप ही के लिये हो रही है। बहुत ये है, कि हमारे दिल्ली में होना चाहिये। आप यहाँ जरूर आइये। अब इसी सिलसिले में मैं यहाँ वहाँ भटकती रहती हूँ। कोई साहब कहेंगे कि मुरादाबाद जरूर आइये। और फलाने जगह जरूर आइये। इस उमर में हम कितना सफ़र करेंगे। इसलिये कि लोग ये न सोचें कि हमने किसी और को फेवर कर दिया। तब फिर जैसे मैंने सोचा कि एरोप्लेन टूर्स में नहीं जाऊंगी। यूरोप में जाऊंगी नहीं। तो यूरोपिअन्स हम जहाँ जाते हैं वहाँ आते हैं। रोमानिया गये। वहाँ पहुँचे हुये हैं और हम रशिया गये, वहाँ पहुँच गये। सारे वहाँ पहुँच जाते हैं। क्योंकि अब माँ से मुलाकात न हुई। माँ तो आती ही नहीं हमारे यहाँ। तो जो वो खर्चा हमारे आने का करते थे, तो उसी से वो लोग सब आते हैं। अब देखिये सहजयोग में आप सब का नाम सब को मालूम। ये कौन है, वो कौन है। रिश्तेदारी कितनी है? बहुत बड़ी रिश्तेदारी। दुनिया भर में। और जब आप घूमने लगेंगे इस तरह से, जैसे अब हम कह रहे हैं कि अच्छा, अब हम दिल्ली कभी नहीं आयेंगे और अब हम नागपूर आयेंगे, समझ लीजिये। तो सारे नागपूर आयेंगे। है कि नहीं ये बात! तो इस तरह से ये डिट्चमेंट होना चाहिये। तो मैं देखती हूँ कि माँ, आप यहाँ आइये। आप वहाँ आइये। कोई सोचता ही नहीं, कि इस उमर में हम इतनी मेहनत कर रहे हैं। इतना हमें चलना-फिरना पड़ता है। और हर समय आप, ये इधर खींच रहा है, वो उधर खींच रहा है, उधर खींच रहा है। तो कैसे हो सकता है?

इस पर भी थोड़ा सब लोगों को समझाना चाहिये, कि माँ को जितना कार्य करना चाहिये उतना माँ ने कर दिया और अब उनकी जो मर्जी होगी वो होगी। हम लोग उनपे कोई चीज़ नहीं रखेंगे। वो कहेंगी तो पूजा करेंगे। वो खुद कहे मान्य हैं, तो है, नहीं तो नहीं। उनपे जबरदस्ती किस तरह की नहीं करेंगे। इससे ये हो जायेगा की हमारी हेल्थ थोड़ी सी बढ़ जायेगी। अगर और थोड़ा कार्य करने का है, उसके लिये मैं नहीं चाहती की मेरी खींचातानी हों। अब जो भी आपको प्रोजेक्ट करना है, आप लोग उसे करिये। व्यवस्थित रूप से उसे सोच लें और वो बोझा मेरे सर पे मत डालिये। छोटी छोटी चीज़ों के लिये, कोई फोन करते हैं, फलाना है। अरे भाई, तुम लोग सब सहजयोगी हो। पॉवर दे दी है। मुझे क्यों परेशान करते हो? आप लोग करिये। अब आपकी ये जिम्मेदारी है। मैं तो सोचती हूँ कि

मेरे बच्चे बहुत बड़े बड़े हो गये हैं। बहुत रिस्पोन्सिबल हो गये हैं और सब कुछ समझते हैं। और ये दिलासा आपको देना चाहिये कि, 'माँ, आपको परेशान नहीं करेंगे। हम लोग ठीक करेंगे। हम इस चीज़ को ठीक कर लेंगे। उस चीज़ को ठीक कर लेंगे।' एक्सपिरिअन्सेस जब शुरू हो जायेगा तब मुझे यकीन हो जायेगा कि ऐसी कोई बात नहीं। अभी तो हालांकि ऐसी हालत है, कि यहाँ से चिट्ठियों पे चिट्ठी। किसी का कुछ, किसी का कुछ। लेकिन उससे कहना चाहिये कि भाई, आपको चिट्ठी भेजना है तो सेंटर्स में भेजो। आप क्यों माँ को परेशान करते हो। अब ये देखना चाहिये कि कितने लोगों ने सहजयोग के कितने लोगों के प्रॉब्लेम सॉल्व किये हैं। हमारे जैसे।

हम ही सॉल्व करें। उसका ये प्रॉब्लेम है। अब जब ये बात आ जाती है तो पहले तो आपको सहजयोग पूरी तरह से मालूम होना चाहिये और आप शुद्ध अंतःकरण के हो। दोनों चीज़ बहुत जरूरी है। क्योंकि आप, बहुत से लोगों को मैंने देखा कि हाँ, लाओ, मैं तुम को ये ठीक करता हूँ। तो उसका ऐसा दम निकाल देते हैं कि आदमी कहता है कि, बाबा, सहजयोग से छुट्टी। ऐसा करिये कि एक कमिटी बनायें। उस कमिटी के थ्रू सोल्यूशन्स होने चाहिये। कहीं गये तो उन्होंने बताया कि इनका ये प्रॉब्लेम है, उनका ये प्रॉब्लेम है। अब मेरे खयाल से इस दशा से आप लोग पूरी तरह से परिचित है। आप लोग जानते हैं कि क्या करना चाहिये। हर एक चीज़ के लिये। और अगर बन पड़ा तो इस पर भी मैं किताब लिखना चाहती हूँ। किसी को कोई प्रॉब्लेम हो तो कैसे सोल्यूशन दें। पर आप लोग खुद ही इसको लिख सकते हैं। आप खुद ही इसको बता सकते हैं। अब उससे क्या हो जायेगा, कि ये बोझा जो मेरे उपर है वो लोगों पे आ जायेगा। और उसमें आप पनपेंगे। उसमें आप बढ़ेंगे। और ये नया साल, इस दिन आप सोच लें कि अगले नये साल कोई नयी चीज़ हो। इसके लिये मैं आप सब से पहले कह रही हूँ। बाद में मैं परदेस में कहूँगी। इसलिये कह रही हूँ, कि आप में जो धर्म है, ये जो अँडवान्टेज है, जो सभ्यता आपके अन्दर है उसके बूते पर आप बहुत ज्यादा हासिल कर सकते हैं।

फ़ॉरेन में भी आप लोगों को बहुत मानते हैं। कहते हैं कि अगर कोई इंडियन्स मिल जायें, नर्थिंग लाइक इट। अब एक लेडी को भेजा, इंडियन, वहाँ शादी करा कर। उन्होंने ऐसे तमाशे कर दिये कि बाबा! उसे भेज दो वापिस। कोई अंग्रेजी करें। ये चीज़ें हैं जो कि खास कर के देखने की और सोचने की। रही शादी की बात। उस पर भी मैं कहना चाहती हूँ आप लोगों से, कि आप लोग लीडर्स हैं। शादी को बहुत सोच समझ कर तय करें। इससे तो कोई अपने को फायदा तो होता नहीं। आप कितनों की शादी करिये इससे तो कोई फायनॅन्शियल फायदा नहीं होता है, न ही कोई और फायदा होता है। सिवाय इसके की अगर वो हॅपिली मॅरीड हो जायें, हजबंद-वाइफ़, तो उनको फायदा होता है। और बड़े बड़े संत-साधु भी जन्म ले सके। पर वो लोग नहीं सोचते कि उन्हें ओबेलाइज्ड करें और शादी कर रहे हैं। अँटिट्यूड ये है, कि वो बड़े हमें ओबेलाइज्ड कर रहे हैं, कि उन्होंने शादी कर ली। उसका हमें क्या अँडवांटेज? जब आप लोग रिकमेंड करिये, तो उनको बताइये कि इसमें माँ को कोई अँडवांटेज नहीं। सहजयोग में कोई अँडवांटेज नहीं। सिवाय इसके की आपकी शादी हम करा रहे हैं। ये आपका अँडवांटेज है।

उसके बाद बहुत छानबीन के बाद ही, शादियाँ करानी चाहिये। क्योंकि एकदम से कहीं से कहीं शादी हो जाती है तो बड़ा प्रॉब्लेम हो जाता है। ये सब देखते हुये कि अब लोग ठीक हो रहे हैं। मरैजेस ठीक हो रहे हैं। मुझे बच्चों की तरफ़ भी ध्यान देना है। अब जब पहली चीज़ मैंने ये करी कि सब की शांति रहेगी। दुसरी मैंने चीज़ करी

कि सामाजिक। औरतों का मान और औरतों को सम्भालना और ये समाज की जो दूरी है, समाज का जो आधार है वो औरते। औरतों को समाज सम्भालना पड़ता है। उसके लिये पुरुषों की इतनी जरूरत नहीं। पुरुषों का काम है अपना एक इकोनॉमिक्स, पॉलिटिक्स करते रहे और औरतों को सम्मान दीजिये। तो वो सॅक्रिफायसिंग होना चाहिये। समझदार होनी चाहिये और सुझ होनी चाहिये। तब ये समाज अपना ठीक है। अब बहुत से औरतें भी जनरस नहीं हैं। कभी सहजयोग के बारे में खास जानती ही नहीं हैं और जो जानती हैं वो पता नहीं अपने को क्या समझती हैं। तो उनमें बैलन्स लाना, उनको बिठा के समझाना, ये बहुत ही जरूरी काम है। दिखने में लगता है कि ऐसी कोई बात नहीं है। लेकिन मैं सोचती हूँ कि ये बड़ी अहं बात है। बहुत इंपोर्टन्ट बात है, कि जो हमारे यहाँ की स्त्री है, उसको पता होना चाहिये कि वो क्या है? किसलिये दुनिया में आयी? उसका क्या काम है? वो है समाज बनाने वाली और उसको समाज बनाने में कहाँ तक आप मदद कर रहे हैं? ये समझना है। इस तरह से एक ध्यान इधर हो जायें। तो दूसरा मतलब ये कि औरतों की तरफ़ ध्यान देना चाहिये। बहुत जरूरी है।

तीसरी जो चीज़ मैंने बतायी है, वो है कि बच्चों के बारे में। अब बच्चों के बारे में भी हमारे जो खयालात है, जो कुछ भी है, उसे समझना चाहिये। बच्चों से बातचीत करनी चाहिये। पूछताछ करनी चाहिये उसे। इंग्लैंड में एक किताब उन्होंने छपी। जिसमें बच्चे सब के बारे में क्या कहते हैं वो लिखा है। वो जब छपी और पब्लिश हुई उसके दूसरे दिन सारी के सारी बिक गयी। और अब ये हाल है कि आपको किताब मिलना मुश्किल है। क्योंकि इतनी मज़ेदार है बच्चों की चीज़। और सब लोग पढ़ना चाहते हैं कि बच्चे क्या कह रहे हैं। बच्चों पर क्या है? बहुत ही प्यारी प्यारी बातें उसमें बच्चों ने बतायी हैं। यहाँ तक उस जमाने में प्राइम मिनिस्टर थे वो, और मिनिस्टर थे, उनके बारे में। उससे दो चीज़ हो जायेगी कि एक तो समाज में बच्चों की कोई अपनी शक्ति है, बच्चे जो कह रहे हैं उनमें क्या इनोसन्स है, उसके थ्रू ये क्या कह रहे हैं ये सारे समाज को मालूम है, तब समाज से आदान प्रदान होता है। बच्चे देखते हैं कि हमने जो कही बात मानी गयी। फिर जो बड़े हैं वो सोचते हैं, कि ये बच्चों ने बात कही, उसको कैसे हमें अटेंड करना चाहिये। वो आदान-प्रदान शुरू करना सीखें। उसमें बच्चों में रूडनेस नहीं आनी चाहिये, न ही उनमें कोई अहंकार होना चाहिये। पर अपनी बात कहने की क्षमता उनमें आ जानी चाहिये। उस बात को भी आप ध्यान दे कर समझ लें। ऐसी प्यारी प्यारी बातें बच्चे करते हैं कि मुझे तो बड़ा मज़ा आता है कि मुझे अगर सौ बच्चे दे दीजिये तो मुझे फिर किसी चीज़ की जरूरत नहीं। ऐसी उनकी जो समझ है, वो बड़ी गहरी है और बड़ी संवेदनशील। छोटी छोटी चीज़ों को देखते हैं और छोटी छोटी चीज़ों को इतनी प्यार से बताते हैं कि जैसे की कोई सारी डिवाइन नॉलेज या जो कुछ डिवाइन अॅक्टिविटी है, उसमें बिल्कुल समाये हैं। छोटी छोटी बातें, अब जैसे यहाँ ये रखा, अगर इधर कोई बच्चा होगा तो वो आ कर इसको ऑर्गनाइज करेगा। ऐसे नहीं। माँ के लिये ये चीज़ पहले रखनी चाहिये। वो चीज़ बाद में रखनी चाहिये। ला के रख दी एक जैसे। ऐसे थोड़ी रखते हैं। वो लोग वाइब्रेशन्स मैंने देखा अधिकतर बच्चे वाइब्रेशन्स पे बात करते हैं। और फिर वो बड़ों को भी बहुत ठीक करते हैं। एक साहब आये। वो बैठ गये। बैठे बैठे वो ऐसे हाथ करने लगे। दो बच्चों ने कहा कि, 'आप ऐसे पीछे हाथ कर के क्यों बैठे हैं? आप सीधे बैठिये इस तरह।' तो वो जरा नाराज़ हो गये। 'तुमसे क्या मतलब?' कहने लगे, 'ऐसे मत बैठिये।' तो कहा, 'क्या बात है?' 'तो आपको माँ के वाइब्रेशन्स कैसे मिलेंगे? ये तो आपको सारे

जमीन के वाइब्रेशनस मिलेंगे।' छोटे छोटे, ३-४ साल के बच्चे। ऐसी अनेक चीजें हैं जो मुझे मालूम है। अब मुझे बड़ा मज़ा आता है कि जिस तरह से वो बच्चे बहुत सारी बातें कह डालते हैं और समझाते हैं और मेरा भी बड़ा खयाल रखते हैं। तो बच्चों से सीखना। तो तीसरी चीज़ है कि बच्चों से सीखना। बच्चों से रिकॉर्ड रखना, उनसे बात करना। फिर जब बड़े हो जाते हैं तो हम जैसे हो जाते हैं। लेकिन जो सम्बेदनशीलता है वो बचपन में होती है, तो उनसे बैठ कर बातें करना, उनसे पूछना किसी भी चीज़ के बारे में, ये बड़ी आह्लाददायिनी चीज़ है। उस आह्लाद को सब को प्राप्त करना चाहिये।

तो मैंने आप से बताया कि रिलिजन के नाम पे जो लोग झगड़ा करते हैं। उनके अन्दर शांति प्रस्थापित करनी है। उनसे बातचीत करनी है। समझाना है। और फिर जो लोग सेकंड हैं। मैंने आपसे बताया कि समाज, समाज अगर अच्छा नहीं होगा, तो कभी भी अमन, चैन, शांति उस देश में नहीं आयेगी। उसकी प्रगति नहीं होगी। अब देखिये, कि रशिया के में देखिये, वहाँ का समाज बहुत अच्छा है। चायना का समाज बहुत अच्छा है। इसी तरह हिन्दुस्थान का समाज भी अच्छा है। और इसका कारण वहाँ की स्त्रियाँ। उन्होंने समाज को बाँध रखा है। अमेरिका में बहुत समृद्धि है, सब कुछ है, पर समाज बहुत खराब है। तो सहजयोग का बड़ा भारी कार्य है, कि समाज की जो फाऊंडेशन है, उसको बनाना। हर जगह के जो समाज हैं, उसमें क्या क्या गैरकानूनी चीज़ें होती हैं? क्या क्या गैर बातें होती हैं? अब जैसे वहाँ पर अमेरिका में छोटी लड़की को बहुत मारापीटा गया, ये हुआ। उनका फोन आया मुझे, 'माँ, हम चाह रहे हैं उस लड़की को सपोर्ट करें।' मैंने कहा, 'बिल्कुल करो। उसको बहुत जरूरत है। उसको क्या चाहिये, क्या नहीं? उसके पास जा कर देखो और उसकी बहुत मदद करो।' थोड़े से पूछ कर के हम उनको सम्भालते हैं। तो एक तरह का नया आयाम, नया डाइमेंशन आपको मिल जायेगा कि ये लोग बहुत परवाह करते हैं। कोई परेशान है, किसी के पास खाने-पीने को नहीं है। किसी के पास और कोई चीज़ नहीं है। जिसके लिये वो परेशान है वो किसी लालच की वजह से नहीं, परेशानी की वजह से परेशान है। तो उसकी तरफ़ ध्यान देना अब हम लोगों को बहुत जरूरी हो गया है। टाइम आ गया है कि जब हम सामूहिक तरीके से समाज की प्रश्नों का हल निकालें और इस तरफ़ ध्यान देना चाहिये। जैसे एक इन्फर्मरी में कहा है, कि जो लोग बूढ़े हो गये हैं और जो चल-फिर नहीं सकते तो उनको जो है कोई रहने की जगह होनी चाहिये। फिर वहाँ एक रेप्यूजी कैम्प हो। फिर वहाँ होने का है। काफ़ी छोटी उमर थी हमारी। तीनों चीज़ें शुरू करने की। हम चले आये पर अभी तक वो चल रही है। तो इस तरफ़ भी ध्यान देना चाहिये, कि समाज में इस तरह के लोग हैं, जो कहना चाहिये कि एक तरह से वंचित, उनकी हेल्थ नहीं अच्छी। अगर आप इस तरह की समाज को मदद करें, तो बड़ा आपके प्रति आदर और प्रेम हो जायेगा। अपने प्रति तो हम कर ही रहे हैं। अपने को तो हमने पा ही लिया है। पर हम औरों को क्या देंगे? और खास कर सहज के शक्ति के कारण आप जितने लोगों की चाहे उनकी बीमारियाँ ठीक कर सकते हैं। उनको मदद कर सकते हैं। उनके साथ अच्छाई कर सकते हैं। उनके लिये आश्रम बना सकते हैं। तो एक तरह से समाज का एक बोझ हमारे उपर है कि जब हमारे पास में परमात्मा ने इतनी शक्ति दी है, तो हम इस समाज को सुचारु रूप से किस तरह से परिवर्तित करें, कि जिससे इनकी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक, इसके अलावा इनकी स्पिरिच्युअल शक्ति भी बढ़ जायें। ये एक कार्य सहजयोगियों को लेना चाहिये। और अलग अलग जगह से ऐसे

लोगों को, समाज में जो लोग पिछड़े हैं, जो दुर्बल हैं, उनकी मदद करनी चाहिये। धीरे धीरे आपको आश्चर्य होगा कि आपके बारे में पॉप्युलैरिटी सारे देश में फैलेगी। असल में लोग ऐसे फोरम बनाते हैं, इस तरह की चीज़ें बनाते हैं, सिर्फ वोट लेने में, या कुछ कमाने के लिये। हमको तो ये कुछ नहीं चाहिये। पर सिर्फ अपनी शक्ति से आप इस तरह से लोगों को ठीक कर सकते हैं।

अब वो लोग अगर ठीक हो जायें, तो वो स्वयं अपनी शक्ति से ये सिद्ध कर सकते हैं कि सहजयोग से लोगों का भला हो और इतना ही नहीं, और ये भी वो सब से खुले आम कह सकते हैं, सहजयोग क्या है, क्या नहीं। पर आपको अब, मेरा मतलब है कि नये साल में एक जो हमारा धर्मा है, या ये जो शेल है, जिसमें हम लोग रहते हैं। उससे निकल कर के बाहर की ओर प्रोजेक्शन करें। शुरुआत में प्रॉब्लेम्स होंगे। खुद आपके अपने, इगो, पहले चीज़ खड़ी हो जायेगी। वो आपकी खोपड़ी खराब करेगी। गुस्सा आयेगा आपको। नाराजगी होगी। तरह तरह की चीज़ होगी। पर इसपे काबू पाने के लिये भी तो आपको बाहर निकलना पड़ेगा। तब जानियेगा कैसे यहाँ ठीक है। यहाँ तो सभी रामनाम है और जब बाहर निकलेंगे तो पता चलेगा, कि बाहर वालों के साथ हम कैसे हैं? क्योंकि इनको भी इंटीग्रेट करना है और जब उनके साथ डील करना समझ जायेंगे, शांतिपूर्वक तब समझना चाहिये, कि हमारे अन्दर एकदम से सफ़ाई हो गयी। ये सफ़ाई की बात है। बहुत से लोग हैं, कि आपकी बात ठीक नहीं, आप जो कर रहे हैं, ठीक नहीं। पर हम में क्या? 'क्यों भाई?' 'क्योंकि आप भगवान है? और हम ये।' भगवान तो कुछ भी नहीं करते। वो तो बिलकुल दूर ही रहते हैं। अगर हम भगवान हैं और हम कर रहे हैं इसका मतलब ये है कि आप भी अपनी की है, जो आपने इतनी उँची स्थिति पायी हुई है। उसको आप इस तरह से बनाईये, कि उसकी। ये नहीं कि बेकार में आप सहजयोगी बने बैठे हैं। उसके उपयोग में लाने की पूर्ण व्यवस्था होनी चाहिये, जो आपके पास आज है। और जब आप अपनी ओर ध्यान देंगे तो आप देखेंगे कि आपका घर, आपका समाज और आपका देश सभी जगह एक तरह का नया स्वरूप आ जायेगा।

अभी सहजयोगी देखिये। हैं बड़े अच्छे ही। उन पर तेज़ है, आँखें चमक रही हैं, वाइब्रेशन्स आ रहे हैं। ये तो कोई भी रियलाइज्ड सोल के हो सकते हैं। पर आप में एक और चीज़ है। इसकी है, इसका यूज आप दूसरों पर कर सकते हैं, सामूहिकता में और जब वो चीज़ शुरू हो जायेगी, सामूहिकता में जब आप अग्रसर होंगे, मूवमेंट होगी आपकी, तो आपको आश्चर्य होगा, कि ये जो आपके पॉवर्स हैं, ये न तो आप सबको ठीक कर सकते हैं और आप को दे भी सकते हैं। ये आज तक हम लोगों ने कि सब लोग एक्सप्रेसिव बहुत हैं इस मामले में। सहजयोग माने सहज। और किस चीज़ के बारे में बात करें। तो किसी भी पैमाने पर ये बात हो रही हो, उसमें ध्यान देना चाहिये और उधर बातचीत करने में कोई हर्ज नहीं और न ही इसमें कोई हर्ज है कि आप उन लोगों को सहजयोग में खींचे और जो नहीं हैं, कोई हर्ज नहीं। पर उनके लिये तसल्ली और उनके लिये शांति देना बहुत जरूरी है।

इन तीन पैमाने पर आप लोगों को काम करना है। ये हम कैसे कह सकते हैं। आप लोगों ने मकान ठीक कर दिया, जमीन ठीक कर दी, बड़ी मेहेरबानी। पर उससे बड़ी बात मैं कह रही हूँ, वो ये कि हम लोगों के दुनियाभर के रिप्यूटेशन उसमें आना चाहिये, कि गरीबों की मदद करते हैं, औरतों की मदद करते हैं,मदद करते हैं,

बीमारों की मदद करते हैं, मिशनरी की तरह नहीं, पर ये कि अन्दर से। इनको महसूस होता है और ये करते हैं। इससे सहजयोग के लिये चार चाँद लगता है। और ये हम लोगों को करना चाहिये। इसको मेहनत करनी चाहिये। कोई मुश्किल चीज़ नहीं।

तो ये नये साल में ये जो मैंने कहा है, इसको ट्रांसलेट कर के भी आपको भेजना पड़ेगा। क्योंकि वो लोग तो सुनना चाहेंगे कि कैसे प्यार करते हैं। एक तरह से हमारे इन्ट्रोस्पेक्शन को बढ़ाना चाहिये और जब वो बढ़ने लगेगा, तो आप उस पॉइंट तक पहुँच जायेंगे जहाँ बिल्कुल निर्विचारिता आ जायेगी। और जैसे निर्विचारिता आ जायेगी, आपको चाहिये कि उसको इसी तरह से आगे बढ़ाना है। निर्विचारिता में जो आप कार्य कर सकेंगे, वो कभी नहीं कर सकते। इसलिये अपनी तरफ ध्यान दे कर के, अपनी ओर ध्यान दे कर के निर्विचार होने का प्रयत्न करें। ध्यान में निर्विचारिता लानी चाहिये। उस निर्विचारिता में आप अपने माइंड से ऊपर चले गये और सारी जो कोई कॉस्मिक शक्तियाँ है वो आपको मदद कर रही हैं और आप जो मन होगा समझ सकेंगे। पर ये सब करते वक्त आपको निर्विचार होना चाहिये। ये बहुत जरूरी बात है। और नहीं तो ये आधा इधर, आधा उधर इस तरह से चलेगा। बहरहाल अब तो ये जरूर कहना चाहिये कि बहुत अच्छे हम लोग संघटित हुये हैं। व्यवस्थित रूप से संघटित हो गये हैं। पर इसकी ये जो हमने किया, ये जो हम रियलाइज्ड सोल हो गये हैं, वो किसलिये किया? क्या बुद्ध के जैसे मरने के लिये किया? क्या महावीर जैसे कपड़े उतारने को किया? किस चीज़ के लिये इसका उपयोग किया हमने, कहाँ पे? और मैंने देखा है लोगों को, वाइब्रेशनस बहुत करते हैं। कहीं जायें तो प्रॉब्लेम हो तो वाइब्रेशनस करना शुरू हो गया। पर ये तो अपने लिये हम करते हैं। अपने के लिये, या ज्यादा से ज्यादा सहजयोग के लिये। पर जो नॉन-सहजयोगीज है उनके लिये भी इसका इस्तमाल करना चाहिये। कोई कठिन बात नहीं। आपके अन्दर शक्ति है, चाहे जिसको देना चाहे, आप दे सकते हो। तो तब जो परोपकारी होने की जो प्रवृत्ति है, आपके अन्दर जागृत हो गयी, तो कोई कुछ नहीं रहता।

अब यही कहना है कि पहले जो भी कहा बैठ के लिख लीजिये और उसका सिलसिला बना लीजिये। और सोचिये की इस पर क्या कर सकते हैं, क्या नहीं।